# शिवशक्ति सरस्वती माँ

47. जब भी मैं मम्मा को देखती थी तो उनके चारों ओर सफ़ेद लाइट ही लाइट दिखायी पड़ती थीं। ऐसे लगता था कि मम्मा शरीर में नहीं है, ऊपर सफ़ेद प्रकाश में रहती है। फ़रिश्ता नज़र आती थीं। मम्मा दिन-रात बाबा को याद करती थीं। हम कभी रात को उठकर दरवाज़े के सुराख से देखते थे तो मम्मा कुर्सी पर बैठी नज़र आती थीं। कभी बालकनी में बैठ योग करती थीं, कभी चाँदनी में बैठ योग करती थीं। मैं समझती हूँ कि योग से ही मम्मा इतनी महान् बनी। मम्मा ने कभी अपनी तरफ़ इशारा नहीं किया। मम्मा हमेशा कहती थीं मेरी मम्मा को याद करो, मेरी उस माँ को याद करो।

48. चलते-चलते मम्मा हमारे से पूछती थीं, ''बच्ची, बाबा को कितना याद करती हो? बाबा से कितना प्यार करती हो?'' इस प्रकार, ज्ञान की लोरी के साथ योग का भी ध्यान खिंचवाती थीं। मम्मा जब दृष्टि देती थीं तो उनकी आँखें इतनी चमकती थीं जैसे कि उन आँखों से बाबा देख रहा हो। मम्मा की दृष्टि से उनका सम्पूर्ण स्वरूप दिखायी पड़ता था। मम्मा ऐसे लगती थीं कि वे यहाँ की नहीं हैं, वे ऊपर से आयी हैं। वे देहधारी नहीं लगती थीं, सूक्ष्म शरीरधारी लगती थीं। उनकी दृष्टि में इतनी ताक़त थी कि जिसको भी वे देखती थीं उसके विचार ही बदल जाते थे।

49. शिव बाबा हमेशा कहते थे कि बाबा नम्बर वन है परन्तु तुम्हारी माँ तो प्लस वन में गयी। मम्मा के चेहरे पर हमने कभी भी उदासी नहीं देखी, उनका सदैव मुस्कराता हुआ चेहरा था। मम्मा का एक-एक बोल सुख देने वाला था। मम्मा के दृढ़ता भरे बोल सदैव औरों को भी दृढ़ संकल्पधारी बनाते थे। मम्मा की दृष्टि पाते ही कइयों को अशरीरीपन का अनुभव होता था। मम्मा की शीतल गोद जन्म-जन्मान्तर के विकारों की तपत बुझाने वाली थीं। अनोखा अनुभव होता था। मम्मा बाबा को फॉलो (अनुसरण) करने में नम्बर वन थीं इसलिए बाबा की सारी दिनचर्या सवेरे से लेकर रात तक कैसे चलती थी उसको सुनकर फॉलो करती थीं।